श्री

XXVI-A/272

श्रीमान कृपानिधानजी

कृपापत्र आया मुसलमानों ने हिंदुओं की पुस्तकें जलाई हैं इसका हाल तवारीख की किताबों में देखकर (मिलने) पीछे से लिखूंगा परन्तु मुझे याद नहीं होता कि मुसलमानों का पुस्तकें जलाना मैंने कहीं पढा हो [illegible] यादि कि कैसे [illegible] हिंदुओं के [illegible] करना [illegible] गुनाह बताने के हवाले तो जगह जगह देखने में आते हैं बहुत जोर मिसर में ईसाइयों के किताबखाने जलाने का है उसी परसे सब जगह के लिये प्रमाण दिया जाता है पारसियों की पुस्तकें तो मुसलमानी वक्त में इतनी नष्ट हुई हैं कि अबतक उनकी धर्म पुस्तकें भी पूरी नहीं मिलती हैं और पुस्तकों का तो क्या कहा जावे उन को देखते हुवे हिंदुओं की पुस्तकों की तो इतनी बरबादी नहीं हुई है

[illegible] हिंदुओं की [illegible] पुस्तकें जलाने का [illegible] बात मैं बनी हुई [illegible] तवारीख से लिखकर

[illegible] जो [illegible] नहीं छप [illegible] और दीजिये

मुसलमानों ने जरूर पुस्तकें नष्ट की होंगी परन्तु इ-
बहुत नहीं जितनी मिश्र यूनान और फारस में की
हिन्दुओं की बहुत सी पुस्तकें बोध जैन और शैव
वैष्णवों के झगड़ों में भी नष्ट हो गई हैं और बहुत
सी पंडितों के घराने से जाती रही हैं और रद्दियों में
बिक गई हैं मेरे देखते हुए भी ऐसा हुआ है टोंक में
एक पंडित मन्नालाल थे उनके पास बहुत पुराने ग्रंथ
थे उनमें विश्वकर्मा संहिता भी थी जिसमें कलें बनाने
की विधि लिखी थी परन्तु उन्होंने अपनी पुस्तकें देखने
तक दिखाई भी नहीं जिनका अब पता नहीं है पंडितों
की औलाद बहुधा अपढ़ रह जाती है और औरतें तो
[illegible] हैं वे पुस्तकों को [illegible] रद्दी करार देती
हैं या रद्दी में बेच देती हैं यहां जोधपुर में भट्टजी का
घर पुस्तकों के वास्ते मशहूर है मैंने उनके भाइयों को
देखा जो आपस में मुकदमे के झगड़े करते थे और पुस्तकें
भाई के पास थीं वह किसी को दिखाता नहीं था अब उनके
घर में लड़के रह गये हैं या औरतें हैं पुस्तकें गल सड़ रही हैं
एक जती के पास बहुत पुस्तकें थीं उसका चेला एक पूत था गुरु के मरे पीछे
पुस्तकें और [illegible] पासरा बेचकर चला गया एक औषधालय
के घर पुस्तकें कुठारी में छुपाई हुई थीं अरसात [illegible] बरसा बहुत
हुई घर गिर पड़ा पुस्तकें बह गईं किसी एक को मिलीं तो पंडित था।
इन बातों से मतलब यह है कि पुस्तकें के नष्ट हो जाने के कारण
बहुत कुछ हो जाता भी है। जैपुर में महाराजाओं का बड़ा घर था और
अब भी है परन्तु वर्तमान महाराज ने अपने बाप दादों के लिखवाई
की हुई पुस्तकें जैपुर के बाहर बेच दी हैं जिनको देखना लोग